रेडियो धारावाहिकः जीवन तेरे रूप अनेक

एपिसोड–5

हमारी फसलें **आलेखः देवेन्द्र मेवाड़ी**

उद्घोषकः जीवन तेरे रूप अनेक। प्रस्तुत है राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद और आकाशवाणी के सहयोग से तैयार किया गया यह धारावाहिक कार्यक्रम।

आज की कड़ी का शीर्षक है– 'हमारी फसलें'। इस आलेख के लेखक हैं श्री देवेन्द्र मेवाड़ी।

सूत्राधरः पिछली कड़ी में आपने सुना जीवों की भारी विविधता वाले प्रमुख केन्द्रों अर्थात् बायोडायवर्सिटी के 'हॉट स्पाट्स' के बारे में। आपने सुना कि दक्षिण भारत में पश्चिमी घाट और उत्तरी भारत में पूर्वी हिमालय क्षेत्रा जीवों की विविधता के महत्वपूर्ण केन्द्र हैं। इसके अलावा पूर्वी घाट, वर्षा वन, सागर में स्थित द्वीप और देश का विशाल समुद्रतट भी पेड़–पौधें और प्राणियों की नाना प्रकार की जातियों के सम) क्षेत्र हैं।

हमारे देश में फसलों की भी सैकड़ों जातियां पाई जाती हैं। इनमें से कई फसलों का जन्म भी यहीं हुआ। यहीं से वे दुनिया के अनेक देशों में फैलीं। लेकिन कई फसलें दूसरे देशों से यहां आईं और यहीं की होकर रह गईं।

(मेधा, प्रयास, पापा (प्रशांत, मम्मी)

पापा (प्रशांत): माध्वी, क्या देर है भई। तैयार हो तुम लोग?

मम्मी (माध्वी): मैं तो तैयार हूं। मेध और प्रयास को तैयार कर रही हूं। बस पांच मिनट।

पापाः ये पांच मिनट तुम्हारे कितने मिनटों में पूरे होंगे। गाड़ी पकड़नी है। राइट टाइम पर डिपार्चर है।

प्रयासः पापा गांव में बड़ा आनंद आएगा। न पढ़ना, न लिखना। बस खेलते रहना है।

मम्मीः बेटे, कुछ किताबें भी रख लो। पढ़ोगे। दादा, दादी, ताऊ जी, ताई जी को सुनाओगे।

मेधः हमीं सुनाएंगे? मम्मी वे भी तो कुछ सुनाएंग.

मम्मीः वे भी सुनाएंगे। गांव में वहां के लोकगीत सुनोगे। दादा–दादी तुम्हें मजेदार बातें भी सुनाएंगे।.....चलो अब।

पापाः अच्छा तो चलें अब? चलो बैठो बच्चो। (टैक्सी स्टार्ट होने व हार्न की आवाज,

(टैक्सी दूर जाने की आवाजें)

(रेलवे स्टेशन की आवाजें)

पापाः चलो.....चलो बेटे.....हां, गाड़ी खड़ी है.....यही है....

(ट्रेन की सीटी, चलने की आवाज)

(गांव में, गायों, बकरियों की आवाजें, रिक्शा रूकने की आवाज)

मेधः पापा, हमारा घर आ गया।

मम्मीः बेटे चलो, दादा जी, ताऊ जी, द्वारका चाचा जी के पैर छुओ.....

बाबाः कौन? अरे बहू? बेटा पहुंच गए? अरे, ये मेरी पोती, पोता कितने बड़े हो गए? आओ. .यहां आओ.....

मेधः मम्मी.....मम्मी.....देखो वो गांव की आंटियां क्या गा रही हैं?
(लोकगीत की आवाष उभरने लगती है।)

मम्मीः लोकगीत गा रही हैं बेटे। तुम लोग बैठो। मैं भीतर चलती हूं।

(बुंदेलखंड के एक ग्रामीण घर में महिलाएं लोकगीत गा रही हैं)

मोरे राजा किवरिया खोलो,
रस की बूंदे परीं।..
असड़ा खेती करें किसान
बोई तिली बिनौला धन
जुंडी हो गई दो–दो पान
सखी गावें मंगलाचार हो,
रस की बूंदें परीं।..
जब से हो गई ज्वार सयानी
बिलना भरन लगे सोजानी
निकसी बहुत भुट्टियां प्यारी
उनमें दाने लगे हैं हजार हो,
रस की बूंदें परीं।..

द्वारकाः आ हा हा! जीओ ईसुरी भैया। क्या गीत लिख गए।

बाबाः ठीक कहते हो द्वारका, हम किसानों के मन की बात कह दी। पानी बरसा, हमने हल चलाए। तिल, बिनौला, धन, ज्वार के बीज बो दिए।

द्वारकाः आ हा हा, ज्वार सयानी हो गई। फिर भुट्टों में दाने पड़ गए। बड़ी प्यारी भुट्टियां लगीं। एक–एक में हजार–हजार दाने।

बाबाः अगर फसल मन पसंद, तो द्वारका घर–घर होन लगो आनंद।
(अफसोस के साथ) मगर, द्वारका, सदा न तोरैया फूले, सदा न सावन होय।

ब्रजेश(बिरजू): ऐसी बात नहीं है बाबा। आज तो जवार और भुट्टा–मकई की ऐसी–ऐसी और किसम–किसम की किस्में आ गई हैं कि बस खाद डालो, पानी लगाओ और सोना कमाओ।

द्वारकाः बस–बस बिरजू। अग्रीकल्चर क्या पढ़ने लगा, हमें भी खेती का पाठ पढ़ा रहा है। अरे भई, हजार साल से मकई उगा रहे हैं। क्यों काका?

बाबाः ठीक कह रहे हो द्वारका? कोई आज बो रहे हैं मकई?

ब्रजेशः एग्रीकल्चर पढ़ने तो बाबा आप ही ने भेजा न? अब जो पढ़ रहा हूं वो तो बताऊंगा ही।

बाबाः तू पहले जरा ये पहेली बूझ बिरजू:
हरी थी, मन भरी थी, नौ लाख मोती जड़ी थी,

राजा जी के बाग में दुशाला ओढ़े खड़ी थी।

बिरजू: आप मक्का की बात कर रहे हैं बाबा।

बाबा: अरे तू तो समझ गया! हां तो अब बता। क्या कहना है, कहियो?

ब्रजेश: ये कहना है बाबा कि जो मक्का की फसल है उसे हजार साल से नहीं उगा रहे हैं।

द्वारका: काहे?

ब्रजेश: इसलिए कि मक्का हमारे देश में होती ही नहीं थी। इसका जन्म तो दक्षिणी अमेरिका में हुआ। वहां से ये यहां आई।

बाबा: लो भई और सुनो! मक्का अमरीका से आई! अच्छा तो ये बता धन कहां से आया? (हंसते हुए)

ब्रजेश: धन तो यहीं पैदा हुआ बाबा। हमारे ही देश में।

द्वारका: तेरी किताबन में या ही लिखो है? अरे, या अनाज, साग–सब्जी, फल–फूल तो परमात्मा की देन हैं। हजारों बरस से उग रहौ है यो..

ब्रजेश: द्वारका भैया, परमात्मा कहो या प्रकृति, सभी पेड़–पौधे पहले जंगल में ही उगते थे।

द्वारका: चल तू ही ठीक। तो तू ये बता–तब आदमी खाता क्या था (हा!हा)?

ब्रजेश: जंगली कंद–मूल। फल–फूल और क्या।

बाबा: बिरजू बात तो पते की करौ है द्वारका। तेरी ना चल पाएगी, हां।

ब्रजेश: बाबा सच्चाई ये है कि हमारे फरखों ने पेड़–पौधें और फल–फूलों को चख–चख कर हजारों साल चुना। उन्हें बोया और बटोरा। तब जाकर वे फसलें बनीं। जो अनाज हम आज खा रहे हैं वो हमारे फरखों की देन है।

बाबा: सही कहते हो बेटा। फरखों का करज तो हम कभी नहीं तार सकते।

द्वारका: काका करज कैसा?

बाबा: अरे भलाई का करज। अपनी फश्तों का कितना भला कर गए हैं..(पंडित चतुर्वेदी का प्रवेश)

चतुर्वेदी: राम– राम काका।

बाबा: राम–राम पंडत जी। अच्छे मौके पर आए। आप भी पढ़े–लिखे हो। बिरजू कहता है कि ये अनाज, फल–फूल सब पहले जंगली रहै?

द्वारका: और, या को आदमी पालतू बनायो है?

चतुर्वेदी: कौनो किताब पढ़े हो बिरजू बेटा? अन्न प्राशन संस्कार कराने जा रहा हूं। माता प्रसाद के बेटे के दो दांत निकल आए हैं..

ब्रजेश: पायलागूं पंडित जी। ..दांत?

चतुर्वेदी: अरे रे! दांत, हां दांत–दूध के दांत। हां.तो मैं क्या कह रहा था?.हां..हां कह रहा था– अरे बिरजू? बेटा जब वेद लिखे गए तब भी ये दांत चावल, जौ, उड़द, और तिल खा रहे थे ..सुनो– (सुर में) व्रीहीमत्तं यवमत्तमथो माषमथा विलम्य...

ब्रजेश: यही कह रहा था मैं पंडित जी कि धन हमारे देश में पैदा हुआ। वैदिक युग में भी इसकी खेती की जा रही थी। पंडित जी हर फसल की अपनी राम कहानी है।

बाबाः बेटा बिरजू, बातें तो तू ठीक कर रहा है। तभी कहते हैं ज्ञान की बातें तो किताबों में लिखी हैं। मगर ये ज्ञान हमको कहां से मिले।

बिरजूः किसान मेले से बाबा। काका आप भी चलो। हमारी कृषि यूनिवर्सिटी में हफ़्ते भर का किसान मेला लग रहा है। वहां ज्ञान भी मिलेगा और देश के कोने–कोने से आए किसान भी। कृषि फार्म में एक से एक फसल भी देखने को मिलेगी।

द्वारकाः तुम्हारी खेतीबाड़ी के वैज्ञानिकों से हम बात कर सकेंगे क्या?

बिरजूः बिल्कुल कर सकेंगे काका। किसान गोष्ठी में कई वैज्ञानिक आते हैं।

बाबाः चलो, हम लोग किसान मेला देखने चलेंगे। गांव के कुछ और लोग भी ले चलेंगे।

प्रयास : पापा हम भी जाएंगे।

पापाः बेटे फिर यहां कौन रहेगा दादी के पास। हम लोग तो गांव देखने आए हैं।

मेधः ठीक है पापा। हम यहीं रहेंगे।

संगीत––––––––––––––––––––––––

(किसान मेले में लाउड स्पीकरों पर गाने/घोषणाएं)

भीड़ः भीड़ की आवाजें...यो बीज नयो है, ..वा ट्रैक्टर देखो? यो का है भाई? ..कीड़े मारने की दवा..अच्छा, अच्छा.या बीज तो मैं जरूर लूंगो..ये कणक दा बीज कौन–सा है जी? साडे पिंड में बो सकदे?..

(लाउड स्पीकर पर घोषणा)

–हैलो..हैलो.सभी किसान भाई ध्यान दें। कृषक गोष्ठी का समय हो गया है। आप लोग गोष्ठी में भाग लेने के लिए हॉल में आ जाएं। गोष्ठी में आप अपने सवाल हमारे कृषि वैज्ञानिकों से पूछ सकते हैं।..सभी किसान भाई ध्यान दें।

बाबाः यो बिरजू कहां है?

ब्रजेशः साथ ही हूं बाबा।

बाबाः अच्छा तो ले चल किसान गोष्ठी में।

द्वारकाः हां काका, जरा सवाल–जवाब हो जाए। हम भी तो पूछें।

(माइक पर हॉल में घोषणा)

घोषणा : देश के कोने–कोने से आए हुए किसान भाइयो, आपका हार्दिक स्वागत है।.आप अन्नदाता हैं। अपने खेतों में अन्न उगा कर हमें देते हैं। हम विज्ञान की नई रिसर्च, नई खोजों से आपके हाथ मजबूत करना चाहते हैं। इसलिए हम सदा आपके साथ हैं।

आपके मन में जो भी सवाल हैं उन्हें खुल कर पूछिए। यहां हमारे वैज्ञानिक बैठे हुए हैं। ये आपके सवालों का जवाब देंगे।

मैं इनका परिचय देता हूं। ये डॉ. टी. बी. सिंह– किस्मों के बारे में बताएंगे, ये डॉ. द्विवेदी –रोग बीमारियों के बारे में, डॉ. पाठक कीड़ों के विशेषज्ञ हैं, डॉ. गुप्ता मिट्टी के बारे में बताएंगे और इंजीनियर सक्सेना जी कृषि यंत्राों के बारे में।..और मैं, मैं डॉ. सागर सिंह, मुझसे आप कुछ भी पूछ सकते हैं..

आप में से कोई किसान भाई अपना परिचय देना चाहे तो आपके सामने माइक है। उस पर दे सकते हैं:..

: मैं..मैं नर्मदा प्रसाद झांसी, उत्तर प्रदेश से।

: साडा नाम कर्तार सिंह है जी, पिंड बरगाडी, फरीदकोट।

: मैं राजस्थान से आया हूं। उदय सिंह राठौड़।

: मेरा नाम रामास्वामी। अर्काडु। तमिलनाडु से।

: मैं लद्दाख से नोर्बू लामा।

डॉ. सागर सिंहः किसान भाई अब अपने सवाल पूछ सकते हैं।

ब्रजेशः बाबा आप पूछिए।

द्वारकाः हां काका। फिर मैं पूछूंगा।

बाबाः डॉक्टर साहिबान, मेरा पोता ये बिरजू यहां पढ़ता है। कहता है– अनाज, साग–सब्जी, फल–फूल सब जंगली पेड़–पौधे थे। यो बात कुछ समझो नहीं.

डॉ. सिंहः आपका पोता ठीक कहता है। इस ध्रती में पेड़–पौधें की तकरीबन तीन लाख जातियां हैं। नर्मदा प्रसाद जी इनमें से तकरीबन 40 हजार जातियां तो हमारे देश में पाई जाती हैं।

बाबाः (आश्चर्य से) क्या? चालीस हजार?

डॉ. सिंहः हां, और इनमें से 166 जातियां ऐसी हैं जिनका जन्म हमारे देश में हुआ। इतना ही नहीं, इन फसलों की रिश्तेदार 320 जातियां हमारे जंगलों में उग रही हैं।

रामास्वामीः अम तो कैला उगाते, मरावल्ली किझांगू और नेल्ल उगाते।

कर्त्तार सिंहः की उगाते प्रावो?

स्वामीः टेपियोका, धन उगाते।

डॉ. सागर सिंहः टेपियोका की फसल दक्षिण अमेरिका से आई, आप लोग जानते हैं?

कर्त्तारः हम तो कनक उगाते हैं–गेहूं। धन भी।

नोर्बू लामाः हमारे लद्दाख में तो 'बक ह्वीट' उगाते हैं।

डॉ. सागरः देखा किसान भाइयो, कहीं आप धन उगा रहे हैं, कहीं गेहूं। कहीं ज्वार–बाजरा है तो कहीं टेपियोका। कहीं बकह्वीट, मतलब कुटू। तो, तरह–तरह की जलवायु में आप लोग अलग–अलग फसल उगाते हैं। अनुमान है कि हमारे देश में 356 तरह की फसलें उगाई जा रही हैं।

स्वामीः एतना फसल तो हम जानते नहीं जी।

डॉ. सिंहः एक साथ तो कोई भी नहीं जान सकता। किसान भाइयो, एक बात और। इन फसलों की 326 जातियां जंगलों में भी उग रही हैं। वे इनकी रिश्तेदार हैं।

कर्त्तारः तुसी की दस्या सी? जंगली रिश्तेदार? फसलां दे वी?

डॉ. सिंहः हां, वे जंगलों में ही हैं।

कर्त्तारः फेर तां चंगा है।

डॉ. सागरः और कोई किसान भाई? हां–हां आप पूछिए।

द्वारकाः डॉक्टर साब, ये फसल को पालतू बनाने का क्या चक्कर है? एक सवाल। दूजा सवाल ये है कि ये कोई फसल यहां पैदा हुई, कोई वहां अमेरिका में। जरा ये भी समझाओ। मेरा नाम है द्वारका।

डॉ. सागरः द्वारका जी बात ये है कि जो फसल आदमी को पसंद आई, उसे चुन कर उसकी खेती करने लगा। बढ़िया पौधें के बीज चुन–चुन कर उसे और बढ़िया फसल बना दिया। मतलब, फसल को पालतू बना दिया।

कर्त्तारः वाह जी, हम तो समझे थे जानवर ही पालतू बनाए हमने।

डॉ. सागरः अब दूसरा सवाल कि फसलें यहां पैदा हुईं कि वहां..आपको इसका जवाब देंगे डॉ. सिंह..

डॉ. सिंहः किसान भाइयों, जैसे आदमी कोई कहीं पैदा हुआ और कोई कहीं। उसी तरह हमारी फसलें भी पैदा हुईं। कुछ हमारे देश में तो कुछ दूसरे देशों में।

स्वामीः एक बात। वो देश को पहचानती नहीं जी।

डॉ. सिंहः जी ठीक कह रहे हैं आप। वो सिरफ धरती को पहचानती हैं। तो, जरा गौर से सुनिए। हमारे देश में जिन फसलों का जन्म हुआ है वे हैं– धन, गन्ना, अरहर, मूंग, उड़द..

बाबाः और, हमारी मक्का, गेहूं? आलू?

डॉ. सिंहः ये बाहर से आईं। मक्का मध्य अमेरिका से, गेहूं पश्चिम एशिया से और आलू दक्षिणी अमेरिका से।..मक्का और आलू दोनों को हमारे देश में फर्तगाली लाए। कहते हैं आसफखान ने 1615 में थामस रो को अजमेर में आलू की दावत दी थी। और सुनिए, मूंगफली, काजू, अनन्नास और चीकू भी दक्षिणी अमेरिका में ही पैदा हुए।

द्वारकाः तो हमने कौन–सा फल दिया दुनिया को?

डॉ. सिंहः आम। आज आम दुनिया के कई देशों में उगाया जा रहा है।

डॉ. सागरः हां, तो कहने का मतलब ये है किसान भाइयो कि फसलों का जन्म तो अलग–अलग जगहों में हुआ मगर वे दूसरे देशों में भी फैल गईं। आप लोगों ने उनकी खेती करके उन्हें अपना बना लिया। प्याज, टमाटर, सेब, नाशपाती, अंगूर, लोंग, धनिया सब ऐसी ही फसलें हैं।

बाबाः हमारी समझ में तो यो बात आ रही है कि हम भले ही दस फसलें उगा रहे हैं मगर देश–दुनिया में सैकड़ों फसलों की खेती हो रही है। हर फसल की, किसम–किसम की।

डॉ. सिंहः किसम–किसम की फसलों और उनकी किस्मों की बदौलत दुनिया भर में आदमी का पेट भर रहा है।

बाबाः दाल–रोटी चल रही है कहिए।

डॉ. सागरः आप सही कह रहे हैं। नाना प्रकार की फसलें हैं, किसम–किसम की किस्में हैं और इनकी जंगली जातियां भी हैं। इसलिए खतरा कम है।

कर्त्तारः हुण खतरा कैसा जी?

डॉ. सागरः ये खतरा कि अगर एक ही किस्म या जाति की खेती करें, तो कहीं किसी बीमारी या कीड़ों से वह बर्बाद हो गई तो हम लाचार हो जाएंगे।

द्वारकाः ऐसा भी होता है क्या?

डॉ. सिंहः होता है। आलू को झुलसा ने मारा और आयरलैंड में लाखों लोग अकाल में दम तोड़ गए। बंगाल के महा अकाल में धन की फसल चौपट होने के कारण कितने लोग बेमौत मारे गए। हमारे देश के कई इलाकों में वर्षों पहले धन की फसल ध्ब्बा रोग मतलब 'ब्लास्ट' की बीमारी से बुरी तरह बर्बाद हो गई थी।

बाबाः बीमारी का प्रकोप तो हो ही जाता है, क्या करें।

सिंहः दवाई का इस्तेमाल करें। और, आपको एक बात बताऊं। फसलों की जो जातियां यों ही जंगलों में उग रही हैं उनसे वैज्ञानिक बीमारियों से बचाव के गुण ले रहे हैं। कीड़ों से बचाव के गुण ले रहे हैं। कम पानी में भी अच्छी उपज देने के गुण ले रहे हैं।

बाबाः इसका मतलब जंगलों में उगने वाली जातियां तो बड़े काम की हैं।

डॉ. सिंहः बिल्कुल, बहुत काम की हैं। समझ लीजिए, ऐसी जातियां अच्छे गुणों का खजाना हैं।

(बाबा, द्वारका, ब्रजेश अन्य बाहर आते हैं।)

बातचीत के स्वरः ...ठीक कह रहे हैं।

.चलो, मेले में कुछ और देखते हैं।

.अच्छा बीज भी तो देखना है।

(मेले की आवाजें)

घोषणाः किसान भाइयों के लिए...कठफतली का शो..आइए और जरूर देखिए..देखिए कि क्या कहती हैं ये जानदार और शानदार कठफतलियां..आइए किसान भाइयो.. कठफतलियों की बात सुनते जाइए..आपके नाम उनका पैगाम..

गानाः अरे हम सबके नाम आया

ये नया पैगाम

खेतों में हरियाली फैले

भरे रहें खलिहान!

(संगीत)

रंगलीः अरे रे रे रे...रंगला, ये हरियाली कहां फैला रहा है? मेरे लिए तो हरी चूनर तक नहीं लाता...

रंगलाः बस बोलती रहती है..बोलती रहती है। अरे मैं खेतों की हरियाली की बात कर रहा हूं, तुझे चूनर की पड़ी है।

रंगलीः खेतों की चूनर तो रंगला हरी–भरी फसलें हैं।

रंगलाः बिल्कुल ठीक बोली। रंगली, ये खेतीबाड़ी के बड़े–बड़े वैज्ञानिक कहते हैं–बढ़िया बीज बोने चाहिए और नई–फरानी फसलों को उगाते रहना चाहिए।

रंगलीः अच्छा? लेकिन क्यों?

रंगलाः क्योंकि फसलें बची रहेंगी तो वे आगे भी चलती रहेंगी।

रंगलीः रंगला, बात तो सही है। कल हमारे बच्चे, फिर उनके बच्चे, फिर उनके बच्चे...फिर उनके..

रंगलाः अरे चुप कर..तेरा रिकार्ड रूक गया है।..

रंगलीः रूक नहीं गया रंगला, मैं सोच में पड़ गई हूं। अरे बच्चे और उनके बच्चे सैकड़ों–हजारों वर्षों तक क्या खाएंगे?

रंगलाः अनाज, साग–सब्जी और फल–फूल।

रंगलीः हां, ठीक कहते हो। कागज और प्लास्टिक तो खा नहीं सकते। पैदा तो यही ज्यादा हो रहा है रंगला।

(सोच कर) अब समझी। हमें फसलों को बचाना होगा। रंगला?

(संगीत)

दोनोंः चलो खेतों में हरियाली लाएं
घर–घर में खुशहाली लाएं
आओ अपनी फसल बचाएं
आओ अपनी फसल बचाएं!

(फेड आउट संगीत)

उद्घोषकः आज की कड़ी में आपने सुना फसलों की जैव विविध्ता के बारे में। यह आलेख श्री देवेन्द्र मेवाड़ी का था और इसे प्रॉड्यूस किया श्री .....ने।

फसलों की तरह ही घरेलू पालतू पशुओं और वन्य जीवों की भी हजारों जातियां हैं। हमारे जीने के लिए इनका जीना भी जरूरी है। इस बारे में सुनेंगे आप इस कार्यक्रम की अगली कड़ी में।